iqtA1 mahasiswa

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा व बाल विकास समग्र विकास की आधारशिला.docx

kelas A1

UMUM

Konsorsium PTS Batch 4

Document Details

Submission ID

trn:oid:::1:3614519889

Submission Date

Jul 21, 2026, 12:15 AM GMT+7

Download Date

Jul 21, 2026, 12:21 AM GMT+7

File Name

पूर्व-प्राथमिक_शिक्षा_व_बाल_विकास_समग्र_विकास_की_आधारशिला.docx

File Size

17.6 KB

8 Pages

2,581 Words

13,019 Characters

0% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography

Top Sources

0%	Internet sources
0%	Publications
0%	Submitted works (Student Papers)

Top Sources

0% Internet sources

0% Publications

0% Submitted works (Student Papers)

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा व बाल विकास: समग्र विकास की आधारशिला

सारांश- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बालक के समग्र विकास की आधारशिला मानी जाती है। जन्म से लगभग छह वर्ष की आयु तक का समय बालक के मस्तिष्क, भाषा, व्यवहार, सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक विकास का सर्वाधिक संवेदनशील काल होता है। इस अवधि में प्राप्त अनुभव, शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाएँ तथा पारिवारिक व विद्यालयी वातावरण बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा न केवल विद्यालयी उपलब्धियों को बढ़ाती है, बल्कि आजीवन अधिगम, सामाजिक समायोजन, नैतिक विकास एवं जीवन कौशलों की भी सुदृढ़ नींव रखती है।

मुख्य शब्द- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, बाल विकास, समग्र विकास, खेल-आधारित अधिगम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020।

भूमिका- बाल्यावस्था मानव जीवन का सबसे संवेदनशील, सृजनात्मक तथा विकासोन्मुख चरण है। इसी अवस्था में व्यक्तित्व, बुद्धि, भाषा, भावनाओं, सामाजिक व्यवहार तथा नैतिक मूल्यों की आधारशिला रखी जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मस्तिष्क का तीव्र विकास होता है, जिसके कारण इस अवधि में प्राप्त अनुभवों का प्रभाव व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है। इसलिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केवल विद्यालय में प्रवेश की तैयारी नहीं, बल्कि बालक के समग्र विकास की आधारभूत प्रक्रिया है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करना मात्र नहीं है, बल्कि उनमें सीखने की जिज्ञासा, रचनात्मकता, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास, भाषा कौशल, समस्या-समाधान क्षमता व नैतिक मूल्यों का विकास करना भी है। आधुनिक शिक्षा-दर्शन के अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा बालक की स्वाभाविक रुचियों, खेल, अनुभव व गतिविधियों पर आधारित होनी चाहिए।

वर्तमान समय मंे तीव्र सामाजिक परिवर्तन, नगरीकरण, तकनीकी विकास तथा परिवार की बदलती संरचना में प्रारम्भिक शिक्षा के स्वरूप को भी प्रभावित किया है। डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग, सीमित सामाजिक संपर्क तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण ने बालकों के विकास के समक्ष नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। ऐसी परिस्थितियों में गुणक्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बच्चों को संतुलित संवेदनशील तथा उत्तरदायी नागरिक बनाने का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग स्वीकार करते हुए आंगनबाड़ी केन्द्रों, पूर्व प्राथमिक विद्यालयों एवं प्रारम्भिक कक्षाओं के समन्वय पर विशेष बल दिया है। यह नीति इस बात पर बल देती है कि यदि बालक को जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उपयुक्त वातावरण पोषण, स्वास्थ्य व गुणक्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो, तो उसका संपूर्ण व्यक्तित्व संतुलित एवं प्रभावी रूप से विकसित हो सकता है।

साहित्य समीक्षा- बाल विकास एवं पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक शोध कार्य व अध्ययन किए गए हैं-

(1952) च्प्ंहमज् ने अपने संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत में स्पष्ट किया है कि बालक ज्ञान का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि सक्रिय निर्माता होता है। प्रारम्भिक अवस्था में वह प्रत्यक्ष अनुभवों व गतिविधियों के माध्यम से सीखता है।

(1978) टल्हवजोल् ने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि बाल विकास सामाजिक अतः क्रियाओं एवं भाषा के माध्यम से होता है। शिक्षक एवं अभिभावक बालक के अधिगम में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

(1969) स्पेंसर ने बाल केंद्रित शिक्षा, स्वतंत्र अधिगम व तैयार वातावरण की अवधारणा प्रस्तुत की, जो आज भी पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने म्ब्बम् को शिक्षा की आधारशिला मानते हुए खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण को सर्वोत्तम पद्धति स्वीकार किया है।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि गुणक्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बच्चों के समय विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका प्रभावशीलता पर अभी भी व्यापक शोध की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य

- **पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन करना।**
- **बाल विकास के प्रमुख आयामों का विश्लेषण करना।**
- **बाल विकास में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन करना।**
- **खेल आधारित अधिगम व अनुभवात्मक शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।**
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में म्ब्बम् के महत्व का विश्लेषण करना।**
- **पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियां व सुधारात्मक उपायों का अध्ययन करना।**

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक व वर्णनात्मक विश्लेषण प्रकृति का है। इसमें पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, छब्क्.थ् 2020 तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रकाशित साहित्य का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है तथा विषय का व्याख्यात्मक व तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा, स्वरूप व उद्देश्य

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा औपचारिक विद्यालयी शिक्षा का प्रथम सोपान है। सामान्यतः यह शिक्षा 3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को प्रदान की जाती है। इस अवस्था में शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं होता है, बल्कि उनके शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक व नैतिक विकास के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराना होता है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा-दर्शन में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का जीवनपर्यन्त अधिगम की आधारशिला माना गया है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्व प्राचीन गुरुकुल परम्परा से लेकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था तक स्वीकार किया गया है। वर्तमान समय में आंगनबाड़ी केन्द्र, बालवाड़ी, नर्सरी एवं अन्य प्रारम्भिक शिक्षण संस्थान इस उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभल एवं शिक्षा (म्ब्ब्म्) को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग मानते हुए इसे आधारभूत अवस्था का प्रमुख घटक घोषित किया है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का मूल आधार यह है कि प्रत्येक बालक जन्मजात जिज्ञासु होता है। वह अपने परिवेश को देखकर, सुनकर, स्पर्श करके, खेलते हुए तथा अनुभवों के माध्यम से सीखता है। इसलिए इस स्तर पर शिक्षण प्रक्रिया बालक-केंद्रित, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारिक तथा अनुभवात्मक होनी चाहिए। च्पंहमज (1952) के अनुसार बालक स्वयं अपने अनुभवों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करता है जबकि टलहवजोल (1978) ने सामाजिक अतः क्रिया एवं भाषा को अधिगम का आधार माना है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- बालक के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना।
- सीखने के प्रति जिज्ञासा एवं सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करना।
- भाषा व संप्रेषण कौशल का विकास करना।
- सामाजिक समायोजना व सहयोग की भावना विकसित करना।
- आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता का विकास करना।
- रचनात्मकता व कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करना।
- स्वास्थ्य, स्वच्छता व अनुशासन को आदतों का विकास करना।
- अपपप नैतिक व मानवीय मूल्यों की आधारशिला रखना।
- औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के लिए बालक को तैयार करना।

इस प्रकार पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केवल विद्यालय-पूर्व तैयारी नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यकता आधार तैयार करती है।

बाल विकास की अवधारणा व प्रमुख आयाम

बाल विकास एक सतत व क्रमिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बालक जन्म से किशोरावस्था तक विभिन्न विकासात्मक चरणों से गुजरता है। विकास का आशय केवल शारीरिक वृद्धि नहीं, बल्कि व्यवहार, बुद्धि, भाषा, भावनाओं, सामाजिकता एवं नैतिकता में गुणात्मक परिवर्तन से भी है। विकास के प्रत्येक आयाम का अन्य आयामों से घनिष्ठ सम्बंध होता है। इसलिए बाल विकास को समग्र दृष्टि से समझना आवश्यक है-

1. शारीरिक विकास- शारीरिक विकास बालक के व्यक्तित्व की आधारशिला है। इसमें शरीर की ऊँचाई, वजन, मांसपेशियों का विकास शारीरिक समन्वय, स्वास्थ्य तथा मोटर कौशल सम्मिलित हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल-कूद, योग, नृत्य, दौड़, संतुलन सम्बंधी गतिविधियों तथा सूक्ष्म व स्थूल मोटर कौशल विकसित करने वाले अभ्यास बच्चों के शारीरिक विकास को गति प्रदान करते हैं।

यदि प्रारम्भिक अवस्था में पोषण, स्वास्थ्य एवं शारीरिक गतिविधियों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए, तो बालक मं े आत्मविश्वास सक्रियता व सीखने की क्षमता भी बढ़ती है। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन व संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण का आधार है।

2. संज्ञानात्मक (बौद्धिक) विकास- संज्ञानात्मक विकास से आशय सोचने, समझने, तर्क करने, समस्या का समाधान करने, स्मृति तथा निर्णय लेने की क्षमता के विकास से है। च्पंहमज (1952) के अनुसार पूर्व-प्राथमिक आयु का बालक पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में होता है, जहाँ वह प्रतीकों, चित्रों व भाषा के माध्यम से सीखता है।

इस अवस्था में कहानी, चित्र, पहेली, ब्ला ॅक निर्माण, वर्गीकरण, मिलान, गिनती व खोजपरक गतिविधियों बच्चों के बौद्धिक विकास को सुदृढ़ बनाती हैं। शिक्षक यदि बच्चों को प्रश्न पूछने, खोज करने तथा प्रयोग करने के अवसर प्रदान करें, तो उनमें स्वतंत्र चिंतन व समस्या-समाधान क्षमता विकसित होती है।

3. भाषा-विकास- भाषा बालक के संज्ञानात्मक व सामाजिक विकास का आधार है। पूर्व प्राथमिक अवस्था में बालक तीव्र गति से नए शब्द सीखता है तथा अपनी अभिव्यक्ति को विकसित करता है। कविता, कहानी, चित्र-पुस्तक, संवाद गीत, अभिनम व समूह चर्चा भाषा विकास के प्रभावी माध्यम हैं। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि विचार निर्माण का भी आधार है। समृद्ध भाषायी वातावरण बच्चों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति व सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करता है।

4. सामाजिक विकास- सामाजिक विकास के अन्तर्गत बालक, दूसरों के साथ रहना, साझा करना, सहयोग करना, नियमों का पालन करना व सामूहिक उत्तरदायित्व निभाना सीखता है। पूर्व प्राथमिक विद्यालय बच्चों

को परिवार के बाहर सामाजिक अनुभव प्रदान करते हैं, जहाँ वे विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों के साथ सहभागिता करते है।

समूह गतिविधियाँ, सामूहिक खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम व सहयोगात्मक अधिगम सामाजिक विकास को सुदृढ़ करते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों में नेतृत्व, अनुशासन, सहिष्णुता तथा लोकतांत्रिक व्यवहार का विकास होता है।

5. संवेगात्मक विकास- संवेगात्मक विकास बालक की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने व नियंत्रित करने की क्षमता से सम्बंधित है। इस अवस्था में प्रेम, सुरक्षा, प्रोत्साहन व सकारात्मक वातावरण का विशेष महत्व होता है। यदि शिक्षक व अभिभावक बच्चों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करें, तो उनमें आत्मविश्वास, भावनात्मक संतुलन व सकारात्मक आत्म-छवि विकसित होती है।

6. नैतिक विकास- नैतिक विकास बाल विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। इस अवस्था में बालक सत्य बोलना, अनुशासन का पालन करना, दूसरों की सहायता करना, ईमानदारी, सहयोग व उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को सीखना प्रारम्भ करता है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा का स्वरूप उपदेशात्मक न होकर व्यावहारिक होना चाहिए। शिक्षक के आदर्श आचरण, प्रेरक कहानियाँ, समूह गतिविधियों तथा दैनिक जीवन के अनुभव बच्चों में नैतिक मूल्यों का स्वाभाविक विकास करते हैं। बालक अनुकरण के माध्यम से अधिक सीखता है। अतः परिवार व विद्यालय दोनों का आचरण नैतिक शिक्षा का प्रमुख स्त्रोत है।

बाल विकास में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की भूमिका

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बालक के जीवन की वह आधारभूत अवस्था है, जहाँ उसके व्यक्तित्व, व्यवहार, अधिगम शैली तथा जीवन-दृष्टि का निर्माण प्रारम्भ होता है। इस स्तर पर प्राप्त अनुभव भविष्य की शैक्षिक उपलब्धियों, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक संतुलन व नैतिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान, तंत्रिका-विज्ञान तथा शिक्षा अनुसंधान यह स्वीकार करते हैं कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मस्तिष्क का तीव्र विकास होता है, इसलिए इस अवधि में प्रदान की गई गुणक्तापूर्ण शिक्षा का प्रभाव दीर्घकालिक होता है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षरज्ञान या संख्याज्ञान कराना नहीं है, बल्कि बालक को ऐसा शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराना है जहां वह स्वतंत्र रूप से सीख सके, प्रश्न पूछ सके, प्रयोग कर सके तथा अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण कर सके। यही प्रक्रिया उसके समग्र विकास का आधार बनती है-

1. शारीरिक विकास में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की भूमिका- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा बालकों के शारीरिक विकास को व्यवस्थित दिशा प्रदान करती है। इस अवस्था में शरीर की वृद्धि के साथ-साथ स्थूल एवं सूक्ष्म कौशलों का विकास अत्यंत आवश्यक होता है। विद्यालय में आयोजित दौड़, कूद, संतुलन अभ्यास, गेंद के खेल,

चित्रकारी, रंग भरना, मिट्टी से आकृतियाँ बनाना, कागज काटना व ब्लाकों से संरचना तैयार करना जैसी गतिविधियाँ बच्चों के हाथ-आँख समन्वय, मांसपेशीय नियंत्रण तथा शारीरिक दक्षता को विकसित करती हैं।

2. संज्ञानात्मक (बौद्धिक) विकास में भूमिका- पूर्व-प्राथमिक अवस्था में बालक अत्यधिक जिज्ञासु होता है। वह अपने आसपास की वस्तुओं, घटनाओं व व्यक्तियों के बारे में निरन्तर जानना चाहता है। गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा उसकी इस स्वाभाविक जिज्ञासा को सकारात्मक दिशा प्रदान करती है। चित्र-पुस्तकों का अध्ययन, पहेलियाँ, वर्गीकरण, मिलान, गिनती, प्रयोगात्मक गतिविधियां, विज्ञान के सरल अनुभव, प्रकृति अवलोकन व समस्या समाधान आधारित गतिविधियाँ बच्चों में तार्किक चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा रचनात्मकता का विकास करती हैं।

3. भाषा विकास में भूमिका- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा भाषा विकास का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। इसी अवस्था में शब्दावली का तीव्र विस्तार होता है तथा बालक अपनी बातों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखता है। कहानी-वाचन, कविता, गीत, चित्रवर्णन, संवाद, भूमिका-अभिनय तथा समूह चर्चा जैसी गतिविधियाँ बच्चों के श्रवण, वाचन, बोलने व अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करती हैं।

4. सामाजिक व संवेगात्मक विकास में भूमिका- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय बालक के लिए परिवार से बाहर पहला सामाजिक वातावरण होता है। यहां वह विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों के साथ रहना, सहयोग करना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, साझा करना व समूह में कार्य करना सीखता है। इस स्तर पर शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह मार्गदर्शक, संरक्षक व प्रेरक के रूप में बच्चों के भावनात्मक विकास में योगदान देता है।

सकारात्मक विद्यालयी वातावरण बच्चों में आत्मविश्वास, सुरक्षा की भावना, सहानुभूति, सहयोग, आत्मनियंत्रण व सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करता है। भावनात्मक रूप से सुरक्षित बालक सीखने में अधिक सक्रिय व रचनात्मक होता है।

खेल-आधारित अधिगम का महत्व

आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान में खेल को बालक का स्वाभाविक कार्य माना गया है। खेल के माध्यम से बालक अनंदपूर्वक सीखता है तथा बिना किसी मानसिक दबाव के नई अवधारणाओं को आत्मसात करता है। तिवमइमस उवदजमेेवतप ं च्पंहमज माध्यम माना है। खेल-आधारित अधिगम के प्रमुख लाभ निम्न हैं-

सीखने में रुचि व प्रेरणा का विकास।

रचनात्मकता व कल्पनाशक्ति का विस्तार।

समस्या-समाधान क्षमता का विका।

सामाजिक सहयोग व नेतृत्व क्षमता का निर्माण।

भाषा व संप्रेषण कौशल का विकास।

आत्मविश्वास व निर्णय क्षमता में वृद्धि।

तनावमुक्त व आनंददायक अधिगम।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 व छब्थ् थ्वत थ्वनदकंजपवदंस ैजंहम (2020) भी खेल, आधारित, गतिविधि-आधारित व अनुभवात्मक शिक्षण को प्रारम्भिक शिक्षा की सबसे उपयुक्त पद्धति मानते हंै।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 व मूल्यपरक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा को केवल ज्ञान व रोजगार का माध्यम नहीं मानती, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, संवैधानिक मूल्यों व उत्तरदायी नागरिकता के निर्माण का प्रभावी साधन मानती है। नीति में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया है-

मूल्य आधारित व समग्र शिक्षा।

अनुभवात्मक व गतिविधि आधारित अधिगम।

भारतीय ज्ञान परम्परा व सांस्कृतिक विरासत का समावेश।

संवैधानिक मूल्यों का विकास।

पर्यावरणीय उत्तरदायित्व व सतत विकास।

अप जीवन-कौशल व सामाजिक उत्तरदायित्व।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 स्पष्ट करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल मानव संसाधन तैयार करना नहीं है, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो नैतिक, संवेदनशील, लोकतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण हो।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव- बालकों में नैतिक मूल्यों के प्रभावी विकास के लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं-

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव

बालकों में नैतिक मूल्यों के प्रभावी विकास के लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैं-

- परिवार में प्रेम, विश्वास व अनुशासन का संतुलित वातावरण बनाया जाए।
- माता-पिता स्वयं नैतिक आचरण का आदर्श प्रस्तुत करें।
- विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा को नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।

- **शिक्षकों को नैतिक शिक्षा व जीवन कौशल आधारित प्रशिक्षण दिया जाए।**
- **महापुरुषों के जीवन व प्रेरक प्रसंगों को शिक्षण में सम्मिलित किया जाए।**
- **अप डिजिटल साक्षरता व साइबर नैतिकता की शिक्षा दी जाए।**
- **अपप विद्यालय, परिवार व समाज के मध्य सतत सहयोग स्थापित किया जाए।**

निष्कर्ष- आज के वैश्विक व डिजिटल युग में नैतिक मूल्यों व महत्व और बढ़ गया है। आधुनिक तकनीक व वैज्ञानिक प्रगति ने जीवन को सरल बनाया है, परन्तु यदि इनको उपयोग नैतिकता से रहित होगा तो सामाजिक व मानवीय संकट उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि चरित्रवान, उत्तरदायी एवं संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यदि बाल्यावस्था में नैतिक मूल्यों की मजबूत नींव रखी जाए, तो भविष्य में एक सशक्त, संवेदनशील, न्यायपूर्ण व विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है। बाल विकास में नैतिक मूल्यों का समावेश केवल शैक्षिक आवश्यकता नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय दायित्व भी है।

lanHkZ

1- vxzoky] ts-lh- ¼2021½] f'k{kk euksfoKku] fouksn iqLrd eafnj] vkxjkA
2- HkVukxj] vkj-ih- ¼2020½] cky fodkl o f'k{kk euksfoKku vkSj yky cqd fMiks] esjBA
3- 'kekZ] vkj-,- ¼2019½] f'k{kk euksfoKku] vkj- yky cqd fMiks] esjBA
4- ik.Ms;] ds-ih- ¼2022½] cky fodkl o vf/kxe] jk/kk ifCyds'ku] fnYyhA
5- jk"Vªh; 'kSf{kd vuqla/kku o izf'k{k.k ifj"kn] ¼2023½] f'k{k.k&vf/kxe o ewY; f'k{kk] ubZ fnYyhA
6- f'k{kk ea=ky;] Hkkjr ljdkj ¼2020½ jk"Vªh; f'k{kk uhfr&2020] ubZ fnYyhA